भारत में बैंकों का राष्ट्रीयकरण Nationalization of Banks in India

अर्थशास्त्री – IInd Part
4/10/20

वर्तमान समय में बैंक समाज के संपूर्ण आर्थिक विकास की स्थायी आधारशिला है। वास्तव में बैंक समाज की अनेक प्रकार की सेवाएं प्रदान करते हैं। आधुनिक अर्थव्यवस्था में हर प्रकार के आर्थिक लेन-देन में बैंकों का मुख्य योगदान है तथा देश का आर्थिक विकास बैंकिंग प्रणाली से जुड़ा हुआ है। भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने बैंकिंग जैसे महत्वपूर्ण व्यवसाय को निजी व्यक्तियों के हाथों में न छोड़कर उनका राष्ट्रीयकरण करना उचित समझा। इसी क्रम में 19 July 1969 को भारत सरकार ने एक अध्यादेश जारी करके व्यापारिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। इसके पश्चात 9 अगस्त 1969 को इसी आशय का एक कानून संसद द्वारा पारित किया गया। इस कानून के अन्तर्गत भारत के प्रमुख 14 व्यापारिक बैंकों को सरकार ने अपने स्वामित्व एवं प्रबन्धन में ले लिया। इन बैंकों के अंशधारियों को इसके बदले में मुआवजा देने की व्यवस्था की गयी। जिन चौदह (14) बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया वे निम्नलिखित हैं :- (1) Bank of India (2) बैंक ऑफ बड़ौदा (3) Central Bank of India (4) Punjab National Bank (5) Canara Bank (6) Indian Bank (7) Allahabad Bank (8) Syndicate Bank (9) Dena Bank (10) United Bank of India (11) Indian Overseas Bank (12) Bank of Maharashtra (13) United Commercial Bank (14) Union Bank of India. पुनः दूसरी बार 15 April 1980 को भारत सरकार ने अन्य छह बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। जिनकी जमा राशि 200 करोड़ से अधिक थी। इन छह बैंकों का नाम निम्नांकित हैं :- (1) Andhra Bank (2) Corporation Bank (3) New Bank of India (4) Oriental Bank of Commerce (5) Punjab and Sindh Bank and (6) Vijaya Bank. इस तरह स्टेट बैंक आफ इंडिया को छोड़कर राष्ट्रीयकृत बैंकों की संख्या बढ़कर 20 हो गयी और कुल मिलाकर 91% बैंकिंग क्षेत्र का राष्ट्रीयकरण हो चुका। इस पर निजी क्षेत्र का हिस्सा घटकर केवल 4.5 प्रतिशत रह गया है, तथा शेष 4.5 प्रतिशत विदेशी बैंक हैं। बैंकों के राष्ट्रीयकरण के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं :- (1) बैंकिंग व्यवस्था में जन विश्वास जागृत करना :- बैंकों के राष्ट्रीयकरण का प्रमुख उद्देश्य देश की बैंकिंग व्यवस्था में जन विश्वास जागृत करना। (2) राष्ट्रीय बचत में वृद्धि :- प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण, जनता की बचतों को एकत्रित करके उसे उत्पादन में लगानेवाली संस्थाओं को राजकीय स्वामित्व के अन्तर्गत लाने का और पहला कदम है बचतों को जमाओं के रूप में एकत्रित करने से राष्ट्रीय बचत में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है। (3) बैंकिंग सुविधा में विस्तार :- राष्ट्रीयकरण का एक प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाओं का विस्तार किया जाना था ताकि सर्वसाधारण में बैंकिंग आदत का विकास किया जा सके। (4) बैंकिंग एकाधिकार के लिए वित्त :- बैंकों के राष्ट्रीयकरण का एक प्रमुख लक्ष्य यह भी रहा है कि आर्थिक विकास की दृष्टि से वित्तीय अभाव को दूर किया जा सके। बैंकों के राष्ट्रीयकरण का प्रमुख उद्देश्य बैंक साख एवं साधनों पर उचित एवं प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित करना था, ताकि उसका अधिकतम उपयोग राष्ट्रीय हित में किया जा सके।

R.L.S. College Sunhsena. 4/10/20 Bhawan

भारत का विदेशी व्यापार
(India's Foreign Trade)

शास्त्री-IInd yr
[redacted]:

Asso Prof [redacted] 4/10/20.

वास्तव में वर्तमान समय में कोई भी देश विदेशी व्यापार के बिना अपनी अर्थव्यवस्था का विकास नहीं कर सकता है। अल्पविकसित अथवा विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए विदेशों से कुछ कच्चे माल, मशीनीकरण, औजारों, आदि के आयात की आवश्यकता पड़ती है। आयातों के मूल्य चुकाने के लिए ऐसा देश अपने निर्यात में भी वृद्धि करने का प्रयत्न करता है ताकि वह विदेशी मुद्रा अर्जित कर सके। विकसित देशों को भी आर्थिक प्रगति बनाये रखने के लिये विदेशी व्यापार की नितान्त आवश्यकता पड़ती है। क्योंकि विकसित देश अपने उत्पादित माल का निर्यात कर विदेशी मुद्रा प्राप्त करते हैं। इस प्रकार विकसित अथवा अविकसित दोनों प्रकार के देशों के आर्थिक विकास में विदेशी व्यापार का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

प्राचीन भारत का विदेशी व्यापार बहुत ही सम्पन्न अवस्था में था। विश्व बाजार में हस्त-शिल्प की वस्तुएं अपना विशिष्ट स्थान रखती थीं। प्रथम विश्व युद्ध के बाद जापानी प्रतिस्पर्धा के कारण भारत के व्यापार में कुछ प्रतिकूलता आ गयी थी, लेकिन बाद में फिर भारत की स्थिति में सुधार हुआ। पुनः 1929 की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी के फलस्वरूप भारत के विदेशी व्यापार को गहरा आघात लगा जिसके फलस्वरूप भारत का निर्यात घट गया। लेकिन कुछ दिनों के बाद (1933-34) विश्व व्यापार के पुनरुत्थान होने से भारत के विदेशी व्यापार की स्थिति उत्तम बनी। द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व भारत मुख्यतः गेहूँ, जूट, चाय, कपास, चमड़ा, मैंगनीज, अभ्रक जैसे कच्चे पदार्थों एवं खाद्यान्नों का निर्यात तथा मशीन, लोहा-इस्पात, दवा, रासायनिक पदार्थ, रेशम, ऊन आदि निर्मित वस्तुओं का आयात करता था। 1938-39 में भारत के निर्यात का 71 प्रतिशत भाग कच्चे पदार्थों एवं खाद्यान्नों का, 29 प्रतिशत भाग औद्योगिक वस्तुओं का था।

लेकिन Second World War के बाद भारत के विदेशी व्यापार में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। देश में उपभोक्ता एवं पूंजीगत वस्तुओं की मांग में वृद्धि हुई और इनका आयात (Import) बढ़ गया। युद्ध के समय एवं युद्ध के बाद देश में खाद्यान्न के अभाव अर्थात् (scarcity) की समस्या उपस्थित हो गई जिससे काफी मात्रा में विदेशों से खाद्यान्नों का आयात (Import) करना पड़ा था, जिसका भुगतान पर बुरा प्रभाव पड़ा। जिस गति से आयात में वृद्धि हुई, उस गति से निर्यात में वृद्धि नहीं हो सकी परिणामस्वरूप देश को भुगतान सन्तुलन प्रतिकूलता से संघर्ष करना होगा। इन कठिनाइयों का सामना करने के लिए फलस्वरूप विदेशी विनिमय की कठिनाई में सरकार ने आयात नियंत्रण की नीति अपनायी।

R.U.S. college
Sahebganj [redacted].

Bhawesh 3/10/20

R.U.S. College Sakhdeng Pakhua

'अर्थशास्त्र'

मार्शल द्वारा दी गई अर्थशास्त्र की परिभाषा

M.P. Shastri-II Part- For 2020

Ans:— Adam Smith जैसे अर्थशास्त्रियों ने धन के अन्तर्गत केवल भौतिक पदार्थों को ही शामिल किया परन्तु सेवाओं जैसे- डाक्टर, वकील, अध्यापक, इत्यादि की सेवाओं को धन के अंतर्गत नहीं माना जो, सर्वथा अनुचित था। परन्तु Adam Smith के परिभाषा को स्पष्ट रूप से नहीं दिया गया। जिसके बाद मार्शल ने 19 वीं शताब्दी के अंत में अर्थशास्त्र की कल्याण-केन्द्रित परिभाषा दी। उन्होंने कहा कि धन साध्य नहीं है, बल्कि वह साधन मात्र है। जिसकी सहायता से मानव-कल्याण में वृद्धि की जा सकती है। इस प्रकार मार्शल ने धन पर से जोर हटाकर 'मनुष्य' के आर्थिक कल्याण पर जोर अधिक दिया। वास्तव में मार्शल महोदय अर्थशास्त्र को सामाजिक विज्ञान का एक अंग बनाकर उसे आदर का स्थान देना चाहते थे। मार्शल के द्वारा दी गई अर्थशास्त्र की परिभाषा निम्न है— "अर्थशास्त्र मानव जीवन के सामान्य व्यवसाय का अध्ययन है। इसमें व्यक्तिगत तथा सामाजिक क्रियाओं के उस भाग की जाँच की जाती है, जिसका भौतिक सुख के साधनों की प्राप्ति और उपभोग से घनिष्ठ संबंध है।" ("Economics is a study of mankind in the ordinary business of life, it examines that part of individual and social action which is most closely connected with the attainment and with the use of materials requisites of well-being.")

मार्शल ने अपनी अर्थशास्त्र की परिभाषा में धन की अपेक्षा मनुष्य के कल्याण पर अधिक जोर दिया। अर्थशास्त्र एक ओर तो धन का अध्ययन है, दूसरी ओर जो कि अधिक महत्वपूर्ण है मनुष्य के अध्ययन का एक भाग है। मार्शल ने अर्थशास्त्र के सामाजिक विज्ञान पर अधिक जोर दिया। अर्थशास्त्र में मनुष्य के साधारण व्यवसाय संबंधी क्रियाओं का ही अध्ययन किया जाता है। मार्शल ने अर्थशास्त्र के अध्ययन को केवल भौतिक साधनों की प्राप्ति तथा उपभोग तक ही सीमित रखा परन्तु साधन अभौतिक भी होते हैं। जैसे- शिक्षक, वकील, डाक्टर, मजदूर इत्यादि अपनी सेवाओं द्वारा ही धन प्राप्त करते हैं और सेवाओं का अध्ययन अर्थशास्त्र में किया जाता है। मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र में आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। परन्तु मनुष्य के कार्यों को आर्थिक तथा अनार्थिक क्रियाओं में बाँटना अनुचित होगा क्योंकि मनुष्य का उद्देश्य "मानव कल्याण" में वृद्धि करना होता है। वास्तव में मार्शल द्वारा दी गई अर्थशास्त्र की परिभाषा बहुत सरल है, परन्तु वह तार्किक दृष्टि से (logically) दोषपूर्ण है।—

Prof- Brajesh Paswan

3/10/20. [redacted]